शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित ब्रह्मतत्त्व विवेचन

डॉ.भारत भूषण सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय
पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड

शोध संक्षेप

गीता का उपदेश महाभारत का नवनीत है। यह सभी दर्शनों, शास्त्रों, उपनिषदों का निचोड़ है। यह अचल नीति की स्थापना का दिव्य सन्देश है। अधर्म पर धर्म की विजय का उद्घोष है। गीता एक ऐसा विलक्षण ग्रन्थ है, जिसमें उतर कर मनन करने पर नित्य नये-नये विलक्षण भाव प्रकट होते रहते हैं। गीता में कई प्रकार के योग मार्गों व योग तत्वों की चर्चा की गयी है, जिसमें ब्रह्मतत्त्व की चर्चा भी समाहित है। जो मनुष्य को सदाचरण से युक्त करते हुए मोक्षगामी करने तक की यात्रा में सहायक है। इनमें संस्कृति समाज के विभिन्न पक्षों, जीवन मूल्यों तथा नैतिक मापदण्डों के भी दर्शन होते हैं। विद्वानों का मानना है कि गीता एक ऐसा शास्त्र है, जिसमें 'गागर में सागर' भरा हुआ है। महाभारत के शिल्पकार भगवान् वेद व्यास जी ने महाभारत में गीता का वर्णन किए जाने के उपरान्त कहा है कि 'गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः[1] अर्थात् गीता को सम्यक् प्रकार अध्ययन कर लेने से फिर अन्य शास्त्रों के अध्ययन की आवश्यकता नहीं रह जाती। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी ब्रह्म तत्त्व पर विचार किया गया है।

भूमिका

गीता के अष्टम अध्याय में 28 श्लोक हैं तथा इस अध्याय में अक्षरब्रह्म योग का निरूपण हुआ है। सातवें अध्याय के अन्त में ब्रह्म, अध्यात्म, अधिभूत, अधियज्ञ व अधिदैव शब्द आए हैं। अष्टम अध्याय के प्रारम्भ के श्लोक इन्हीं की व्याख्या है। कृष्ण कहते हैं कि परम अक्षर ब्रह्म ही अपना स्वरूप अर्थात् जीवात्मा 'अध्यात्म' नाम से कहा जाता है। गीता के अष्टम अध्याय में ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा है कि अक्षर परमं ब्रह्म ब्रह्म का अर्थ है महान् शक्तिवाला। ब्रह्म का शाब्दिक अर्थ है बड़ा। श्रीकृष्ण ने यहाँ ब्रह्म के छः रूप बताये हैं. अक्षर भाव, स्वभाव, भूतभाव, क्षरभाव, पुरुषभाव तथा यज्ञभाव। इन्हीं को क्रमशः ब्रह्म, अध्यात्म, कर्म, अधिभूत, अधिदैवत्, अधियज्ञ कहते हैं।[2]

परब्रह्म परमात्मा का स्वरूप व उसकी प्राप्ति

गीता कहती है कि जो मनुष्य अन्त समय में अचल मन से भक्तियुक्त होकर योगबल से प्राणवायु को दोनों भौहों के मध्य उत्तम प्रकार से स्थिर करके (उस) कवित्र सर्वज्ञ, अनादि, जगत् के (शासनकर्त्ता) सबके विधाता, अन्धकार से परे, सूर्य सदृश (प्रकाशमान), अणु सूक्ष्म से भी सूक्ष्म (अचिन्त्यस्वरूप दिव्य पुरुष) का ध्यान करता है वह उसी दिव्यपुरुष परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त करता है।[3]

ईश्वर की व्यापकता

भगवद्गीता में परमब्रह्म पुरुषोत्तम की प्राप्ति से जिस जीव का कल्याण होता है, उस परम ब्रह्म परमात्मा का निरूपण गीता में सर्वत्र विभिन्न प्रकार से किया गया है। उसके व्यापकत्व के विषय में कहा है कि ईश्वर सर्वत्र ऐसा व्याप्त है जैसे आकाश में वायु[4] संसार के समस्त पदार्थ उससे ऐसे सम्बद्ध हैं जैसे धागे से मणिमाला।[5]

ईश्वर की अलिप्तता

वह सब देहधारियों अथवा सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त होने पर भी उससे ऐसा अलिप्त रहता है। जैसे आकाश सर्वत्र होने पर भी किसी से बद्ध नहीं होता।[6]

परमात्मा सबका बीज है

वह परमात्मा सम्पूर्ण चर-अचर पदार्थ अथवा प्राणियों का बीज है। विश्व में कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं है जो उसके बिना हो अर्थात् जिसमें वह न हो।[7] निर्गुण होने पर भी गुणों का उपभोग करता है।[8] उसके सब ओर हाथ-पैर, सब ओर शिर तथा मुख, सब ओर कान हैं और वह सर्वत्र व्याप्त है।[9]

परमात्मा संसारचक्र का चालक है

गीता कहती है कि वह संसारचक्र को अपने मायारूपी यन्त्र से चला रहा है।[10] सब भूत, प्राणी तथा पदार्थ उसी से उत्पन्न होते हैं और नाश होने पर उसी में लीन हो जाते हैं अर्थात् सबका आदि और अन्त वही है।[11] वह सब भूतों की उत्पत्तिए नाश तथा पालन करने वाला (विष्णु) है।[12]

परमात्मा कैसे हैं ?

वह सब भूतों के अन्दर भी है और बाहर भी है। वह चर भी है और अचर भी है। वह सूक्ष्म होने के कारण अविज्ञेय और दूर होकर भी समीप है।[13] वह सब भूतों में उनके तन्मात्र (अर्थात् पृथ्वी में गन्ध वायु में स्पर्श, जल में रस, तेज, अग्नि, चन्द्र और सूर्य) में प्रकाश और आकाश में शब्द रूप से रहता है। वह तेजस्वियों का तेज भी है, काम और राग (विषयासक्ति) को छोड़कर बलवानों का बल भी वही है, प्राणियों में धर्म के विरुद्ध न होने वाली कामना वही है, सम्पूर्ण पदार्थों में सात्विक, राजस तथा तामसभाव भी उसी से हुए हैं।[14] सूर्य, चन्द्र और अग्नि में रहने वाला तेज, सब वनस्पतियों तथा औषधियों को पोषण करने वाला रसात्मक सोम, भी वही है। सबके हृदय में अधिष्ठित स्मृति तथा ज्ञान की उत्पत्ति तथा नाश उसी से होता है। सब वेदों से जानने योग्य भी वही परब्रह्म परमात्मा है।[15] सब प्रकार के यज्ञ, यज्ञ में पढ़े जाने वाले मन्त्र, यज्ञ की आहुति वही है। वेद तथा सब प्रकार की विद्याएँ वही है। सबकी गति, सबका भर्त्ता (पालने वाला) प्रभु, साक्षी, प्रलय का हेतु निधान (भण्डार) और सबका अव्यय (अविनाशी) बीज वही है। वह अव्यय परमात्मा अनादि और निर्गुण होने के कारण कर्मों के बन्धन में नहीं आता।[16]

ब्रह्मविद की स्थिति

परमात्मा के निरूपण के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि उसे प्राप्त करने के साधन या उपाय क्या हैं? कृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन! यन्त्र पर आरूढ़ हुए के समान सब भूतों को अपनी शक्ति से घुमाता हुआ ईश्वर सब भूतों के हृदय में वास करता है। हे भरतपुत्र! तू उसी (ईश्वर) की सर्वभाव से शरण जा। उसके प्रसाद से परमशान्ति और शाश्वत स्थान को प्राप्त होगा।[17]

गीता में परमेश्वर की प्राप्ति या ब्रह्म-प्राप्ति दोनों का तात्पर्य एक ही है। जैसे कहा है कि योगाभ्यास से मुनिजन ब्रह्म को प्राप्त करते हैं।[18] जिन्होंने काम, क्रोध छोड़ दिया है ऐसे ऋषियों को सर्वत्र ब्रह्मनिर्वाण का अनुभव होता है।[19] इस प्रकार मेरी प्राप्ति, ईश्वर प्राप्ति और ब्रह्म प्राप्ति एक ही स्थिति का नाम है। ब्रह्म तत्त्व को जाननेवाले ब्रह्मविद् के विषय में कहा है कि जिसकी बुद्धि स्थिर हुई है जिसका मोह नष्ट हुआ है वह मनुष्य भूतमात्र का अस्तित्व भिन्न होते हुए भी एक में समाया है ऐसा देखता है और वहाँ से ही सबका विस्तार है, ऐसा समझता है, तब वह ब्रह्म को प्राप्त होता है।[20]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में देखें तो गीता आज के समय को मार्ग दिखाने के लिये परमावश्यक है। क्योंकि ये ग्रन्थ कर्म, ज्ञान व साधना प्रधान है। योग व गीता के अतिरिक्त जीवन के परम सत्य तक पहुँचने का कोई उपाय नहीं है। गीता युगों-युगों से विषादग्रस्त, अकर्मण्य, दीन-हीन, दुःखी व अमित कामी, सकामी व निष्कामी, संन्यासी, ईश्वर विश्वासी (भक्त) सभी को अपने अंक में समेट कर जीवन जीने का पथ प्रशस्त कर रही है।

सन्दर्भ सूची

1.पाण्डेय रामनारायण दत्त शास्त्री (संवत् 2073 14वाँ पुनर्मुद्रण), महाभारत खण्ड 3, गीताप्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 869

2 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक-संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 556-557

(क). अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते।

भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसञ्जितः।। श्रीमद्भगवद् गीता8.3

(ख) अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम् ।

अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर ।।। श्रीमद्भगवद् गीता8.4

3 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 570-571

(क) कविं पुरा मनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।

सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णतमसः परस्तात् ॥ श्रीमद्भगवद् गीता8.9

(ख) प्रयाणकाले मनसा चलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव।

धुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ।। श्रीमद्भगवद् गीता8.10

4 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 610

यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान् ।

तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय।। श्रीमद्भगवद् गीता 9.6

5 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 484

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय।

मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।। श्रीमद्भगवद् गीता 7.7

6 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 886

यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते ।

सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते। श्रीमद्भगवद् गीता 13.32

7 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 710

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन।

न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् । श्रीमद्भगवद् गीता10.39

8 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 861

सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम् ।

असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च।। श्रीमद्भगवद् गीता13.14

9 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 859

सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।

सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति।। श्रीमद्भगवद् गीता13.13

10 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 1190

भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया। श्रीमद्भगवद् गीता 18.61

11 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 482

एतद्योनीति भूतानि सर्वाणित्युपधारय।

अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा। श्रीमद्भगवद् गीता 7.6

12 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 864

अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम् ।

भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं प्रविष्णु प्रभविष्णु। श्रीमद्भगवद् गीता13.16

13 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 862

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च।

सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत् ॥ श्रीमद्भगवद् गीता13.15

14 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 486-492 तक का सार

(क) रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः।

प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु। श्रीमद्भगवद् गीता7.8

(ख) पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ।

जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु॥ श्रीमद्भगवद् गीता7.9

(ग) बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।

बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् । श्रीमद्भगवद् गीता7.10

(घ) बलं बलवतां चाहँ कामराग विवर्जितम् ।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ। श्रीमद्भगवद् गीता7.11
(ङ).ये चैव सात्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये।
मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि।। श्रीमद्भगवद् गीता 7.12
15 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 966-970
(क).यदादित्यो गतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ।। श्रीमद्भगवद् गीता15.12
(ख) गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसो।
पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः ॥ श्रीमद्भगवद् गीता15.13
(ग) अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमण्डितः।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥ श्रीमद्भगवद् गीता15.14
;घद्ध सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं चा
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ।। श्रीमद्भगवद् गीता१५ण्१५
16 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 884
अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः।
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते। श्रीमद्भगवद् गीता 13.31
17 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 1990-1992
(क) ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया। श्रीमद्भगवद् गीता 18.61
(ख) तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।
तत्प्रसादात्परं शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ।। श्रीमद्भगवद् गीता18.62
18 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 341
सन्न्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति। श्रीमद्भगवद् गीता5.6
19 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 377-379 तक का सार
(क) योऽन्तः सुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः ।
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति। श्रीमद्भगवद् गीता5.24
(ख) लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः ।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः॥ श्रीमद्भगवद् गीता5.25
(ग) कामक्रोधवियुक्तानां पतीनां यतचेतसाम् ।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् । श्रीमद्भगवद् गीता5.26

20 दास स्वामी रामसुख (संवत् 2060, 46वाँ संस्करण) श्रीमद्भगवद्गीता साधक संजीवनी, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 370-883

(क) न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् ।
स्थिरबुद्धिरसम्मूढो ब्रह्मवि्द् ब्रह्मणि स्थितः। श्रीमद्भगवद् गीता 5.20

(ख) यथाभूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति।
तत एव च विस्तारं ब्रह्म सम्पद्यते तदा।। श्रीमद्भगवद् गीता 13.30